Padma Bhushan



Prof. Khadg Singh Valdiya

Prof. Khadg Singh Valdiya is a distinguished geologist, academician, active environmentalist and author. Prof. Valdiya is presently an Honorary Professor in the Jawaharlal Nehru Centre for Advanced Scientific Research, Bengaluru. He is internationally recognized for his path-breaking studies on Central Himalaya that serve as a guide and a template for interpreting the structural architecture of the entire Himalaya.

2. Born on March 20, 1937 at Kalaw in eastern Myanmar, Prof. Valdiya had his early education in Pithoragarh, a small town in eastern Uttarakhand and higher education at Lucknow University. After obtaining Ph.D. degree in 1963 from Lucknow University, he had a stint as a Fullbright Fellow at the Johns Hopkins University, Baltimore (U.S.A.). He has held various positions at Lucknow University, Rajasthan University in Udaipur, Wadia Institute of Himalayan Geology, Delhi, Kumaun University, Nainital and Jawaharlal Nehru Centre for Advanced Scientific Research, Bengaluru.

3. Prof. Valdiya has combined his knowledge and understanding of geology and environmental sciences to produce a body of work (Over 112 research papers and 15 books and 42 popular articles in Hindi) acclaimed for its originality and departure from mainstream thinking. His path-breaking work resulted in the rewriting of the history of geological evolution of Lesser Himalaya while his study on active faults in the Indian subcontinent has greatly influenced the development of a comprehensive strategy for natural hazard management. His extensive studies have also led to the commercial mining of magnesite deposits in Pithoragarh, Uttarakhand. His benchmark study on the declining discharges of mountain springs in Kumaun Himalaya culminated in the development of a conceptual framework and working model for augmenting spring discharges as well as for reviving dormant springs.

4. Since 2009, Prof. Valdiya has been working on a Science Outreach Programme among young students and teachers of pre-university colleges in the remote regions of Uttarakhand. He has been a member of the Science Advisory Committee to the Union Cabinet and of a large number of expert committees of the Ministry of Environment & Forests, Department of Science & Technology, Council of Scientific & Industrial Research, University Grants Commission, and member/chairman of governing bodies and research councils of a number of national research institutions. He has been a Fellow of all the three National Science Academies as well as The World Academy of Sciences, the Geological Society of America, the Nepal Geological Society. Banaras Hindu University in 2003 and the G.B. Pant University of Agricultural Science & Technology in 2005 have honoured him with an Honorary Doctorate Degree.

5. Prof. Valdiya has been the recipient of the G.M. Modi Award (2012), Padma Shri (2007), Atmaram Puraskar (2007) under Hindi Sevi Samman of Ministry of Human Resources, Prince Mukharram Jah Gold Medal (2000) of Indian Geophysical Union, National Mineral Award for Excellence (1997) of Ministry of Mines, D.N. Wadia Medal (1995) of Indian National Science Academy, Pitambar Pant National Environment Fellow (1982-1984) of Ministry of Environment, L. Rama Rao Gold Medal (1980) of Geological Society of India and Shanti Swarup Bhatnagar Prize (1976) of Council of Scientific & Industrial Research.

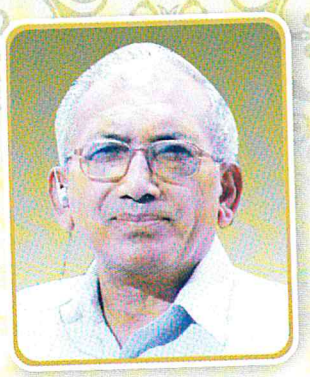

प्रो. खड्ग सिंह वल्दिया

प्रो.खड्ग सिंह वल्दिया एक विख्यात भूविज्ञानी, शिक्षाविद् (एकेडेमिशियन), सक्रिय पर्यावरणविद् और लेखक हैं। आप इस समय जवाहर लाल नेहरू उच्च वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र, बैंगलुरू में मानद प्रोफेसर हैं। आप केन्द्रीय हिमालय के बारे में अपने खोजपरक अध्ययन के लिए अंतरराष्ट्रीय रूप से भलीभांति जाने-माने जाते हैं। आपका यह अध्ययन, सम्पूर्ण हिमालय के ढांचे से संबंधित संरचना की व्याख्या करने के प्रयोजन से एक मार्गदर्शक और सांचे के रूप में अन्य अध्येताओं के अध्ययन का पथ-प्रशस्त करता है।

2. आपका जन्म मार्च 20, 1937 को पूर्वी म्यांमार के कलाव में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा पूर्वी उत्तराखण्ड के एक छोटे से शहर पिथौरागढ़ में और उच्च शिक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय में हुई। सन् 1963 में लखनऊ विश्वविद्यालय से पीएच.डी की उपाधि हासिल करने के बाद आप कुछ समय तक जॉन होपकिन्स यूनिवर्सिटी, बाल्टीमोर (यू.एस.ए.) में फुलब्राइट फेलो रहे। आप लखनऊ विश्वविद्यालय, राजस्थान विश्वविद्यालय, उदयपुर, वाडिया हिमालयी भूविज्ञान संस्थान, दिल्ली, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल और जवाहरलाल उच्च वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र, बैंगलुरू में विभिन्न पदों पर कार्य कर चुके हैं।

3. आपने भूविज्ञान और पर्यावरणीय विज्ञान में अपने ज्ञान और बुद्धि का संयोजन करके, 112 से अधिक शोध-पत्रों और हिन्दी में 15 पुस्तकों तथा 42 लोकप्रिय लेखों का एक रचना-संग्रह तैयार किया है। इस संग्रह में आपकी मौलिकता और आपके, मुख्यधारा के चिंतन से अलग चिंतन की सराहना की गई है। आपके खोजपरक लेखन-कार्यों के फलस्वरूप लघु हिमालय के भूवैज्ञानिक विकास का इतिहास दोबारा लिखा गया है, जबकि आपके भारतीय उप महाद्वीप में सक्रिय फाल्ट्स सम्बन्धी अध्ययन ने प्राकृतिक जोखिम के प्रबन्धन की व्यापक रणनीति के विकास को अत्यधिक प्रभावित किया है। आपके व्यापक अध्ययन के फलस्वरूप पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड में मैग्नेसाइट निक्षेपों (डिपोजिट्स) का वाणिज्यिक खनन भी सुसाध्य हुआ है। आपके कुमाऊँ हिमालय में पर्वतीय झरनों के कम हो रहे डिस्चार्ज से संबंधित बेंचमार्क अध्ययन से झरनों के डिस्चार्ज को बढ़ाने तथा निष्क्रिय पड़े झरनों को पुन: चालू करने के लिए अवधारणात्मक फ्रेमवर्क और कार्यसाधक मॉडल का विकास चरम सीमा पर पहुंचा है।

4. वर्ष, 2009 से आप उत्तराखण्ड के दूर-दराज़ के क्षेत्रों में विश्वविद्यालयी अध्ययन से पहले के कॉलेजों के छात्रों और अध्यापकों के बीच विज्ञान के आउटरीच कार्यक्रम से संबंधित कार्य करते आ रहे हैं। आप केन्द्रीय मंत्रिमंडल की वैज्ञानिक सलाहकार समिति तथा पर्यावरण और वन-मंत्रालय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अनेक विशेषज्ञ-समितियों के सदस्य और कई राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थाओं के शासी निकायों के सदस्य/अध्यक्ष रहे हैं। आप तीनों राष्ट्रीय विज्ञान अकादमियों और विश्व विज्ञान अकादमी, अमेरिका की भूविज्ञान सोसाइटी और नेपाल की भूवैज्ञानिक सोसाइटी के फेलो रहे हैं। आपको सन् 2003 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय ने और सन् 2005 में गोविंद बल्लभ पंत कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने ऑनरेरी डॉक्टरेट की डिग्री से सम्मानित किया है।

6. आपको जी.एम.मोदी पुरस्कार (2012), मानव संसाधन मंत्रालय के हिन्दी सेवी सम्मान के अधीन, आत्माराम पुरस्कार (2007), भारतीय भू भौतिकीय संघ के प्रिंस मुख़र्रम जाह ख़ान स्वर्ण पदक (2000),राष्ट्रीय खनिज मंत्रालय के उत्कृष्टता पुरस्कार (1997), भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के डी.एन. वाडिया पदक (1995), पर्यावरण-मंत्रालय के पीताम्बर पन्त राष्ट्रीय पर्यावरण फेलो (1982-1984), भारतीय भू वैज्ञानिक सोसाइटी के एल.रामा राव स्वर्ण पदक (1980) तथा वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के शान्ति स्वरूप भटनागर पुरस्कार (1976) से सम्मानित किया गया है।